Dr.Uttam Kumar
SRAP College,Barachakia
Mob no-8210561032

Faculty -Commerce
Subject -Business Organisation
Class -2nd Semester
Session-2023-27

कम्पनी का मूल्यांकन अथवा संयुक्त पूँजी वाली कम्पनी के गुण-दोष
(EVALUATION OF A COMPANY *OR* MERITS AND DEMERITS OF JOINT STOCK COMPANY)

कम्पनी या संयुक्त पूँजी वाली कम्पनी के गुण अथवा लाभ (Merits or Advantages of a Company)

संयुक्त पूँजी वाली कम्पनी का जन्म तथा विकास, एकाकी व्यापार और साझेदारी की कठिनाइयों एवं दोषों को दूर करने के लिए हुआ है, अत: इसके निम्नलिखित प्रमुख लाभ है—

(I) **आर्थिक लाभ** (Economic Advantages)

(1) **सीमित दायित्व** (Limited Liability)—कम्पनी व्यवस्था का सबसे प्रमुख लाभ इसके सदस्यों का सीमित दायित्व का होना है। **कैडमैन** के अनुसार, ''व्यावसायिक ऋणों के प्रति दायित्व को सीमित करने का विशेषाधिकार कम्पनी प्रारूप के अन्तर्गत व्यवसाय करने का एक प्रमुख लाभ है।''[1] अंशधारियों का दायित्व उनके द्वारा क्रय किये गये अंशों के अंकित मूल्य (Face Value) तक ही सीमित होता है। इसके विपरीत एकाकी तथा साझेदारी व्यवसाय के सदस्यों का दायित्व असीमित होने के कारण अत्यधिक हानि की दशा में उनकी व्यक्तिगत सम्पत्ति भी प्रभावित हो सकती है। इस सीमित दायित्व के कारण कम्पनी व्यवस्था द्वारा पूँजीकरण को प्रोत्साहन मिलता है।

(2) **जोखिम का श्रेणीयन** (Gradation of Risk)—कम्पनी में जोखिम का श्रेणीयन हो जाता है क्योंकि अंशों का विभाजन दो भागों में होता है—साधारण अंश तथा पूर्वाधिकार अंश। जो विनियोक्ता अधिक जोखिम नहीं लेना चाहते, वे अपने धन का विनियोग पूर्वाधिकारी अंशों में करते हैं। इसका कारण यह है कि पूर्वाधिकारी अंशधारियों को साधारण अंशधारियों की तुलना में कम्पनी के लाभों तथा पूँजी के पुनर्भुगतान दोनों में पहला अधिकार (Priority) प्राप्त होता है।

(3) **जोखिम का विस्तार** (Diffusion of Risk)—एक सार्वजनिक कम्पनी में अंशधारियों का उत्तरदायित्व सीमित होने के साथ-साथ इनकी संख्या पर कोई प्रतिबन्ध नहीं होता है, अत: अधिकाधिक व्यक्ति इसकी सदस्यता लेकर व्यवसाय के विकास में हिस्सा बँटा सकते हैं। इसके कारण इनकी जोखिम का वितरण अधिक व्यापक एवं विस्तृत रूप में हो जाता है, फलत: कम्पनी अधिक जोखिमपूर्ण कार्यों में हिस्सा बँटा सकती है। देश के द्रुत गति से औद्योगीकरण के लिए जोखिम लेने की भावना बहुत महत्वपूर्ण है और कम्पनियाँ इस दिशा में महत्वपूर्ण योग दे रही हैं।

(4) **हित हस्तान्तरण की सुविधा** (Transferability of Interest)—संयुक्त पूँजी वाली कम्पनी के अंश स्वतन्त्रतापूर्वक हस्तान्तरित किये जा सकते हैं। इसके विक्रय की सुविधा स्कन्ध विनिमय बाजारों (Stock Exchange) पर होती है जहाँ पर कि अंशों को चाहे जब खरीदा तथा बेचा जा सकता है। इस प्रकार कम्पनी का सदस्य आसानी से अपने हित का हस्तान्तरण कर सकता है। इसके विपरीत साझेदारी में जब तक शेष सभी साझेदारों की सर्वसम्मति न हो तब तक कोई भी साझेदार अपने हित का हस्तान्तरण नहीं कर सकता।

(5) **जनता का विश्वास** (Public Confidence)—अन्य व्यावसायिक इकाइयों की तुलना में कम्पनी में जनसाधारण का, चाहे वह विनियोक्ता हो, उपभोक्ता हो या कर्मचारी, अधिक विश्वास हो जाता है। इसका कारण यह है कि सरकार का कम्पनी के मामले में नियमन एवं नियन्त्रण रहता है। इसके खाते प्रतिवर्ष छपते रहते हैं तथा इसका स्थायी अस्तित्व होता है।

(6) **ऋण मिलने में सुविधा** (Easy to Get Loan)—कम्पनियों की साख अधिक होने के कारण इन्हें एकाकी अथवा साझेदारी संस्था के मुकाबले में सरलता से ऋण मिल जाता है। कुछ सार्वजनिक वित्तीय संस्थाएँ (जैसे—भारतीय औद्योगिक वित्त निगम) ऐसी हैं जोकि केवल सार्वजनिक कम्पनियों एवं सहकारी संस्थाओं को ही ऋण देती हैं, एकाकी व्यापारी अथवा साझेदारी संस्था को नहीं।

(7) **विशाल वित्तीय संसाधन** (Immense Financial Resources)—अन्य व्यावसायिक संगठन के प्रारूपों की तुलना में कम्पनी संगठन के सबसे अधिक विस्तृत एवं विशाल वित्तीय संसाधन होते हैं। इसके कई कारण हैं; जैसे—(i) सीमित दायित्व का लाभ, (ii) पूँजी का छोटे-छोटे अधिमान वाले अंशों एवं ऋण-पत्रों में विभक्त होना, (iii) सदस्यों की संख्या सबसे अधिक होना, (iv) अल्प बचत को आकर्षित करना, (v) ऋण मिलने में सुलभता का होना, (vi) स्थायी अस्तित्व का होना, (vii) ब्याज की तुलना में अधिक लाभांश प्राप्त करने की लालसा का होना एवं (viii) अंश हस्तान्तरण एवं विक्रय की सुविधा होना आदि।

---

1 "The privilege of limited liability for business debts is one of the principal advantages of doing business under the corporate form of organization." —*Cadman*